लिंग-निर्णय

- दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

3) विदेशज शब्दों का लिंग-निर्णय —

(ii) फारसी शब्दों का लिंग-निर्णय —

* फारसी-अरबी के शब्द सीधे न आकर उर्दू भाषा के माध्यम से हिन्दी में आये हैं। हिन्दी में भी इन शब्दों के प्रायः वही लिंग हैं, जो उर्दू में स्वीकृत है। इसके अपवाद भी हैं, लेकिन बहुत कम।

फारसी पुलिंग शब्द

- फारसी की 'श'-कारांत संज्ञाएँ प्रायः पुलिंग होती हैं। जैसे- जोश, होश, ताश आदि।

⇒ **अपवाद-** तलाश, तराश, लाश आदि।

- फारसी के वे शब्द, जिनके अंत में 'ह' (आ) हो, प्रायः पुलिंग होते हैं। जैसे- आईना, किस्सा, गुस्सा, चश्मा, परदा, पैसा, रोजा आदि।

फारसी स्त्रीलिंग शब्द

- फारसी से ली गयी वे संज्ञाएँ, जिनके अंत में 'इश' हो, प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे- अजमाइश, कोशिश, ख्वाहिश, गुंजाइश, गुजारिश, नुमाइश, पैदाइश, वारिश, मालिश, साजिश, परवरिश, सिफारिश आदि।

(iii) अरबी शब्दों का लिंग-निर्णय —

★ हिन्दी में आये हुए अरबी शब्दों के लिंग-निर्णय में सुगमता के लिए कुछ सूत्र निम्न-लिखित हैं —

अरबी पुलिंग शब्द

- जिन शब्दों के अंत में 'बन्द' हो, वे पुलिंग होते हैं। जैसे- कमरबन्द, शिकारबन्द, गुलूबन्द, इजारबन्द आदि।

- जिन शब्दों के अंत में 'दान' हो, वे पुलिंग होते हैं। जैसे- कलमदान, चिरागदान, नमकदान, पीकदान आदि।

- जिन शब्दों के अंत में 'बान' हो, वे पुलिंग होते हैं। जैसे- बागबान, मेहरबान, सायबान आदि।

  ⇒ **अपवाद-** आनबान आदि।

- जिन शब्दों के अंत में 'इस्तान' तद्धित प्रत्यय हो, वे पुलिंग होते हैं। जैसे- ताजिकिस्तान, तुर्किस्तान, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान आदि।

- जिन शब्दों के अंत में 'वाँ' या 'वान' हो, वे पुलिंग होते हैं। जैसे- कारवाँ, पेंचवान आदि।

— क्रमशः